सुधा ओम ढींगरा

मर्यादा

'दादी जी, पापा रोज शराब पीकर मेरी माँ को पीटते हैं। आप राम - राम करती रहती हैं, उन्हें रोकती क्यों नहीं?' पोती ने नाराजगी से पूछा।

'अरे तेरा बाप किसी की सुनता है जो मेरे कहने पर वह बहू पर हाथ उठाने से रुक जाएगा और फिर पति-पत्नी का मामला है, मैं बीच में कैसे बोल सकती हूँ।'

'आप जब अपने कमरे में मेरी माँ की शिकायतें लगाती हैं, तब तो वे आपकी सारी बात सुनते हैं और फिर पति-पत्नी की बात कहाँ रह गई? रोज तमाशा होता है।'

'वह काम से सीधा मेरे कमरे में आता है, तेरी माँ को जलन होती है। तुझे भी अपनी माँ की तरह , उसका मेरे कमरे में आना अच्छा नहीं लगता।'

'दादी जी, आप पापा की माँ हैं, आपका हक सबसे पहले है पर आपके कमरे से निकल कर वे शराब पीते हैं और माँ से लड़ते-झगड़ते हैं, उन्हें पीटते हैं। यह सब गलत है दादी। आप पापा को बोल दीजिएगा कि अगर आज मेरी माँ पर हाथ उठाया तो हम तीनों बहनें माँ के साथ खड़ी हो जाएँगी और जरूरत पड़ी तो पुलिस थाने भी चली जाएँगी।'

'हे राम! ये सब दिखाने से पहले मुझे उठा क्यों नहीं लिया। मेरा बेटा बेचारा अकेला... काश! मेरा पोता होता, यह दिन तो न देखना पड़ता, बाप की मर्यादा रखता।'

'आप किस मर्यादा की बात करती हैं दादी... मर्यादा सिर्फ पुरुष की ही नहीं, औरत की भी होती है. ..।'

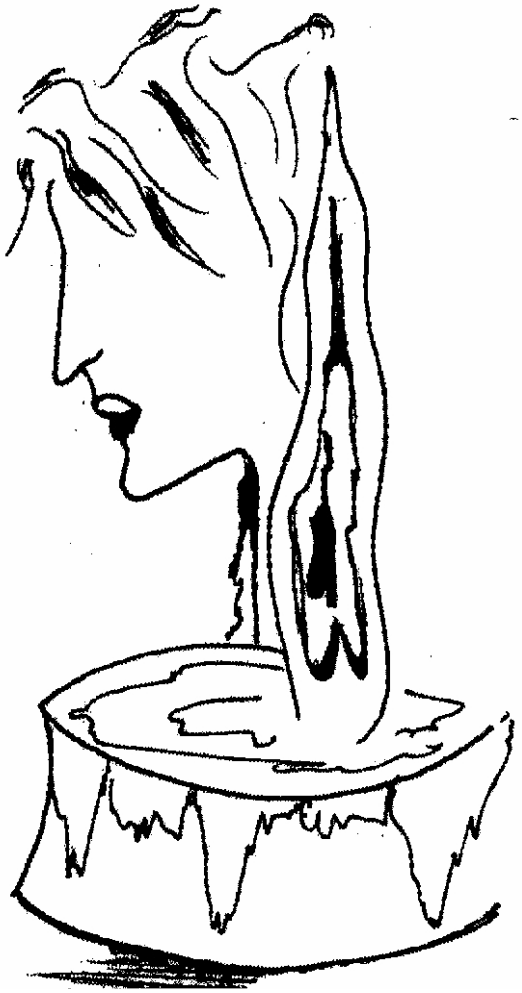

N.C. (U.S.A.)
e-mail : sudhadrishti@gmail.com